भक्तिमयी सदाचारपूर्ण क्रियाएँ

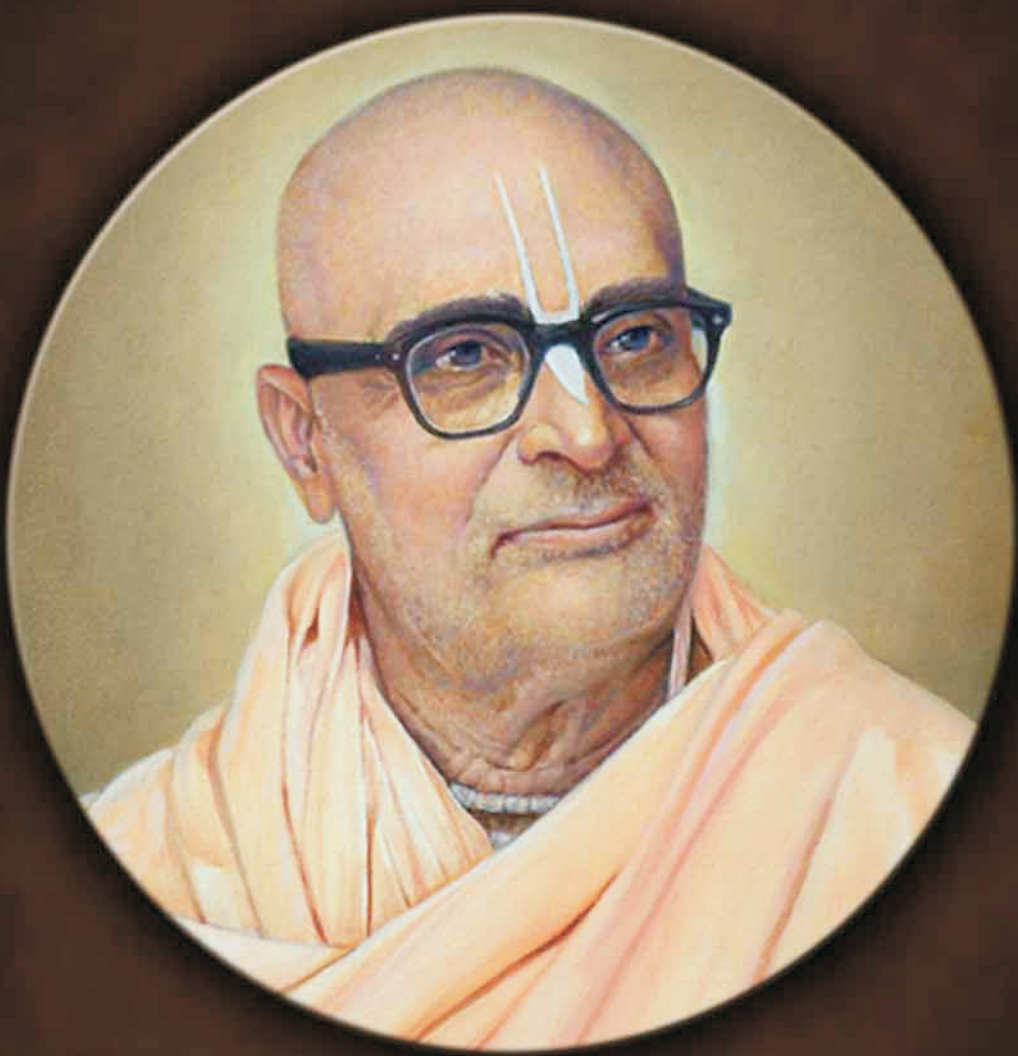

अद्वितीय प्रेम को पहचानने की योग्यता

SGD

श्रीलगुरुदेव

SGD

जब गुरु महाराज ने श्रील प्रभुपाद का दीक्षा आदि लेकर आश्रय तो ग्रहण किया था किन्तु मठवास आरम्भ नहीं किया था, तब वे कोलकाता में एक बड़े घर को किराए पर लेकर वहीं रहते थे। उनके पूर्व-आश्रम के किसी सम्बन्धी व्यक्ति ने, जो एक चित्रकार थे, उन्हें श्रीमन्महाप्रभु का एक तैल-चित्र बनाकर भेंट में दिया था, जिसे उन्होंने अपने

किराए के घर के हॉल की दीवार पर टाँग दिया था। उसी तैल चित्र के समक्ष बैठकर वे अपने गुरुभ्राता श्रीनारायण मुखोपाध्याय तथा बन्धु श्रीहरिदास के साथ कीर्त्तन करते थे।

एक दिन वहीं पर उनके त्यागी सतीर्थ श्रीभक्तिप्रकाश अरण्य गोस्वामी महाराज तथा श्रीकीर्त्तन प्रभु मासिक भिक्षा संग्रह करने के लिए पहुँचे। हॉल में श्रीमन्महाप्रभु के तैल चित्र को देखकर श्रीअरण्य गोस्वामी

महाराज ने गुरु महाराज से पूछा, "श्रीमन्महाप्रभु का आलेख्य सुन्दर है। क्या आपको इसे देखने में सुख मिलता है?"

गुरु महाराज ने उत्तर दिया, "हाँ महाराजजी, कभी-कभी मैं इसके समक्ष बैठकर हरिनाम करता हूँ और मुझे इसे देखकर अत्यधिक सुख मिलता है।"

श्रीअरण्य गोस्वामी महाराज ने थोड़ा गम्भीर होकर कहा, "क्या श्रीमन्महाप्रभु

आपको सुख प्रदान करने के लिए यहाँ विराजमान रहें या फिर आपको श्रीमन्महाप्रभु को सुख प्रदान करने हेतु चेष्टा करनी चाहिए? भगवान् का विग्रह जिसमें कि उनका चित्रपट भी सम्मिलित है, भगवान् से अभिन्न होने के कारण परम सेव्य वस्तु है। अतएव उनकी सेवा हेतु आपको इस चित्रपट को दीवार से नीचे उतारकर किसी उपयुक्त स्थान पर रखना चाहिए।"

श्रीअरण्य गोस्वामी

महाराज की शिक्षा को दृढ़ श्रद्धा के साथ ग्रहण करते हुए गुरु महाराज ने साथ-ही-साथ श्रीमन्महाप्रभु के तैल चित्र को दीवार से नीचे उतार दिया। श्रीमन्महाप्रभु के तैल चित्र के विषय में श्रीलअरण्य गोस्वामी महाराज की शिक्षा के अनुरूप चित्रपट को भगवान् से अभिन्न मानकर, गुरु महाराज ने स्वयं भगवान् और उनके शुद्ध भक्तों के चित्रपट को उचित सम्मान प्रदान करने का आदर्श दिखलाया, उन्होंने अपने उस

श्रीमन्महाप्रभु के तैल चित्र को श्रीगौड़ीय मठ, बाग़ बाजार में भेज दिया। जब भी वहाँ से शोभायात्रा निकलती, वही श्रीमन्महाप्रभु का चित्रपट रथ के ऊपर विराजमान होता था। उन्होंने न तो स्वयं कदापि उन्हें जहाँ तहाँ रखा और न ही अपने किसी आश्रित जन को ऐसा दायित्वहीन कार्य करने की अनुमति प्रदान की। जब कोलकाता स्थित श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ में गुरु महाराजजी ने नाट्य मंदिर में सम्पूर्ण

गुरु-परम्परा के तैल चित्रों को लगाया तो नित्य प्रति साष्टांग प्रणाम करके उनकी सेवा का आदर्श स्थापित किया।

गुरु महाराज के श्रीमन्महाप्रभु के तैलचित्र को दीवार से उतारने के पश्चात्, श्रीअरण्य महाराज ने गुरु महाराज से पुनः अन्य प्रश्न किया, "आपने श्रील प्रभुपाद का शिष्यत्व स्वीकार किया है, आपके रन्धन की क्या व्यवस्था है?"

गुरु महाराज ने उत्तर दिया, "मैंने एक उत्कल निवासी ब्राह्मण को रन्धन के कार्य में नियुक्त किया है। रन्धन का सम्पूर्ण कार्य वही देखते हैं।"

गुरु महाराज की बात सुनकर श्रीअरण्य महाराज ने अत्यन्त आवेग के साथ कहा, "क्या आपके हाथों को मगरमच्छ ने खा लिया है जो आप अपने हाथों से भगवान् के लिए भोग बनाकर उन्हें

अर्पणकर स्वयं प्रसाद ग्रहण नहीं कर सकते ?"

अभी गुरु महाराज कुछ कहते, उससे पहले ही श्रीकीर्त्तन प्रभु अत्यन्त धीमे स्वर में उनसे कहने लगे, "महाराज, आप इनसे इस प्रकार से बात मत करें। यह अत्यन्त भद्र पुरुष हैं। यह स्वयं रन्धन कर भोजन नहीं कर पाएँगे। आप के व्यवहार से इनकी गौडीय मठ के प्रति श्रद्धा शिथिल हो सकती है। यह

असन्तुष्ट हो सकते हैं।"

श्रीकीर्त्तन प्रभु की बात को गुरु महाराज ने भी सुना और देखा कि श्री अरण्य महाराज और भी अधिक असन्तुष्ट होकर कहने लगे, "मैं ही यदि इन्हें नहीं बोलूँगा तो अन्य कौन बोलेगा? यह मेरे गुरुभ्राता हैं, मुझे इन्हें सब कुछ कहने का पूर्ण अधिकार है।"

गुरु महाराज श्री अरण्य महाराज की बात सुनकर गदगद हो गए। उनके इस प्रकार के

व्यवहार से उनका जो अपनापन झलका उसी के कारण गुरु महाराज स्वयं को सम्पूर्ण जीवन तक उनका कृतज्ञ मानते थे। जब भी श्रीअरण्य महाराज की सेवा का कोई सुयोग उपस्थित हुआ, गुरु महाराज ने अत्यन्त उल्लास के साथ उनकी सेवा की।

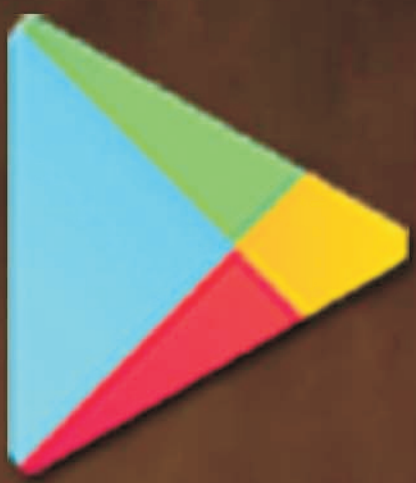

Play Store

SrilaGurudeva

SGD